Dz – जब यीशु ये बातें कह चुका, भीड़ उनकी शिक्षा से
आश्चर्यचकित थी मत्ती ७:२८ से ८:१ | 1

– Save This Page as a PDF–

जब यीशु ये बातें कह चुका,

भीड़ उनकी शिक्षा से आश्चर्यचकित थी

मत्ती ७:२८ से ८:१

अब तक दिए गए इस सबसे शानदार उपदेश पर प्रतिक्रिया मिश्रित रही। ऐसा नहीं था कि उस दिन वहां मौजूद हर किसी को विश्वास था कि येशुआ मेशियाक दविड का पुत्र था। बिलकुल नहीं मोशे! ऐसा निश्चित प्रतीत होता है कि बड़ी भीड़ में से कुछ लोगों ने उस पर विश्वास किया, लेकिन, संकीर्ण द्वार से प्रवेश करने वालों की संख्या ने वही साबित कर दिया जो उसने कहा था: और केवल कुछ ही इसे पा सके (मत्ती ७:१४)।



लेकिन, जो भी रूपांतरण हुआ हो उसे रिकॉर्ड नहीं किया
जाता है। हमें केवल यह बताया गया है कि जब यीशु ने ये बातें कहना समाप्त किया, तो भीड़ उसकी शिक्षा से आश्चर्यचकित हो गई (७:२८)। यीशु ने जो कहा उसकी शक्ति से वे पूरी तरह से चकित हो गये। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसका अधिकांश हिस्सा उनके संदेश के आध्यात्मिक ध्यान और सामग्री के कारण था। उन्होंने ज्ञान, गहराई, अंतर्दृष्टि और बोधगम्यता के इतने व्यापक, समझदार शब्द कभी नहीं सुने थे। भीड़ ने फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की इतनी सीधी और निडर निंदा कभी नहीं सुनी थी। इस्राएलियों ने सच्ची धार्मिकता का इतना सशक्त वर्णन या आत्म-धार्मिकता का इतना अनवरत वर्णन और निंदा कभी नहीं सुनी थी। गलील के रब्बी द्वारा निश्चित रूप से कुछ नए सत्य और अनुप्रयोग प्रकट किए गए थे। हालाँकि, सबसे उल्लेखनीय बात जिसने उस दिन भीड़ को चकित कर दिया वह था उनका पढ़ाने का तरीका।

प्रत्येक रब्बी ने पिछले रब्बी प्राधिकार के आधार पर शिक्षा दी। पढ़ाते समय, एक रब्बी हमेशा पिछले रब्बियों को उद्धृत करते हुए ऐसी बातें कहता है, “यह वही है

Dz – जब यीशु ये बातें कह चुका, भीड़ उनकी शिक्षा से
आश्चर्यचकित थी मत्ती ७:२८ से ८:१ | 2

जो रब्बी कोहेन कहते हैं,” या “यह वही है जो रब्बी कसदन कहते हैं।” लेकिन, इसके विपरीत, येशुआ ने किसी अन्य रब्बी स्रोत को उद्धृत नहीं किया क्योंकि उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति के रूप में पढ़ाया जिसके पास अधिकार था, न कि उनके टोरा-शिक्षकों के रूप में (७:२९)। यह स्पष्ट था कि परमेश्वरको किसी अतिरिक्त अधिकार की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि उनके पास अंतिम अधिकार था। जैसे-जैसे बालक यीशु बड़ा हो रहा था, हर सुबह, परमेश्वर पिता परमेश्वर पुत्र को जगाता था, उसे एक तरफ ले जाता था और उसके भविष्य के सेवकाई की तैयारी के लिए उसे पढ़ाना और प्रशिक्षित करना शुरू कर देता था (देखे Ay – और बच्चा बढ़ता गया और वह बलवन्त हो गया, बुद्धि से परिपूर्ण हो गया और परमेश्वर की कृपा उस पर हुई)। उसके और फरीसियों के बीच की रेखा स्पष्ट रूप से खींची गई थी, और हर कोई इसे जानता था।

इस अर्थ में, येशुआ वास्तव में मशियाच के प्रत्याशित सेवकाई में से एक को पूरा कर रहा था। पवित्र व्यक्ति, धन्य है, वह बैठेगा और नए टोरा की व्याख्या करेगा जो वह मसीहा के माध्यम से देगा। “नया टोरा” का अर्थ है टोरा के रहस्य और रहस्य जो अब तक छिपे हुए हैं। यह किसी अन्य टोरा का उल्लेख नहीं करता है, स्वर्ग न करे, निश्चित रूप से वह टोरा जो उसने हमें हमारे स्वामी मूसा के माध्यम से दिया, जिस पर शांति हो, शाश्वत टोरा है; लेकिन उसके छिपे रहस्यों के रहस्योद्घाटन को “नया टोरा” कहा जाता है (मिड्रैश तलपियोट ५८ए)। मसीह की गतिशील शिक्षा का कितना उपयुक्त अंत! मसीहा टोरा के गहरे अर्थ को प्रकट करने आया है। हम बुद्धिमान बनें और आज भी उस चट्टान पर निर्माण करें।

जब यीशु पहाड़ से नीचे आए तो बड़ी भीड़ ने उनका अनुसरण नहीं किया (मत्ती ८:१) उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि उन्होंने अपने मेशियाक के रूप में उनका अनुसरण किया। निस्संदेह, उनमें से अधिकांश केवल जिज्ञासु थे, उन्होंने पहले कभी किसी को इतने अधिकार के साथ बोलते नहीं देखा था (मत्ती ४:२३-२५ और ७:२८-२९)। वे अप्रतिबद्ध पर्यवेक्षक थे, नाज़रीन ने जो कहा था उससे आश्चर्यचकित थे, लेकिन उन्हें अपने परमेश्वरऔर उद्धारकर्ता के रूप में पालन करने के लिए पर्याप्त रूप से दोषी नहीं ठहराया गया था।

एक इकाई के रूप में, पहाड़ी उपदेश टोरा की धार्मिकता की फरीसी व्याख्या के विपरीत मसीह की धार्मिकता की व्याख्या है। लेकिन इससे भी अधिक, यह मौखिक कानून में सन्निहित फरीसी यहूदी धर्म की यीशु की सार्वजनिक अस्वीकृति थी (Ei – मौखिक कानून देखें)। इसलिए, इससे सैन्हेड्रिन (Lg – महान महासभा) द्वारा उनके मसीहा संबंधी दावों को अस्वीकार कर दिया जाएगा और उन्हें अंतिम रूप से क्रूस पर चढ़ाया जाएगा।